Subject :- History (Subsidiary)
Degree Part I (Sub)
Lecture No - 37

Dr. Hem Narayan Mahto
Deptt of History
9835007367

Date :- 5.5.2020

Ques :- अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधारों व बाजार नियन्त्रण नीति का वर्णन कीजिए।

Ans :- अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति उसकी प्रशासनिक नीति का सबसे महत्वपूर्ण अंग थी। अलाउद्दीन ही मध्य भारतीय इतिहास का एकमात्र ऐसा शासक हुआ है, जिसने आर्थिक सुधार किये। इसी कारण लेनपुल ने अलाउद्दीन को एक महान राजनीतिक अर्थशास्त्री कहा है।

① आर्थिक सुधार के कारण :- (Causes of Economic Reforms) :- अलाउद्दीन एक निरंकुश व स्वेच्छाचारी शासक था। ऐसे शासक की शक्ति का एकमात्र आधार उसका सैन्य बल होता है। विशाल सैन्य बल के कारण ही अलाउद्दीन ने अनेक प्रदेशों पर विजय प्राप्त की थी। इस सैन्य बल के माध्यम से ही वह देश की बाह्य सुरक्षा तथा आन्तरिक शान्ति प्रदान कर सका था, किन्तु विशाल एवं स्थायी सेना की व्यवस्था में प्रचुर धन की आवश्यकता थी। इस प्रकार अलाउद्दीन के आर्थिक सुधारों का प्रमुख उद्देश्य विशाल एवं स्थायी सेना के व्यय का निर्वहन करना था। आर्थिक सुधारों का मुख्य कारण, निःसन्देह मूल्यों में कमी करके सैनिकों को कम वेतन देकर विशाल सेना को संगठित करना था।

② राजस्व में वृद्धि के साधन :- सुल्तान अलाउद्दीन ने सर्वप्रथम राजकोष को भरने का प्रयास किया। इसके लिए उसने शाही राजस्व बढ़ाने के लिए अनेक साधन अपनाये। सुल्तान ने अमीरों से उनकी सम्पत्ति छीन ली।

भूमि-कर को बढ़ाकर डेढ़ गुना कर दिया। हिन्दुओं से भूमि-कर कुल उपज का आधा भाग कर दिया गया। प्रमुख हिन्दुओं एवं खुत, चौधरी आदि को उनके विशेषाधिकारों से वंचित कर दिया गया। उसने भूमि की नाप की व्यवस्था तथा तद्नुसार कर लगाया व वसूल किया। अलाउद्दीन ने अत्यन्त कठोरतापूर्वक राजस्व वसूल किया।

(3) बाजार का नियंत्रण (Control of Market):- सुल्तान अलाउद्दीन की सैनिक-व्यवस्था की सफलता उसके बाजार नियंत्रण पर निर्भर थी। सुल्तान ने एक विशाल सेना संगठित की थी तथा प्रत्येक सैनिक का वेतन भी निश्चित था। वेतन बढ़ाने की स्थिति में अलाउद्दीन न था, अतः उसने ऐसी नीति का पालन किया, जिससे वस्तुओं के मूल्यों में स्थिरता आ सके। उसकी इस नीति को 'बाजार नियंत्रण नीति' (Market Control Policy) कहा जाता है। बाजार नियंत्रण को सफल बनाने के उद्देश्य से सुल्तान ने चार प्रमुख कार्य किये:-

(A) वस्तुओं के मूल्यों का निर्धारण

(B) वस्तुओं की पूर्ति की व्यवस्था

(C) वस्तुओं का उचित वितरण

(D) बाजारों का प्रबन्ध

(A) वस्तुओं के मूल्यों का निर्धारण:- भूमि-कर बढ़ाकर तथा अन्य तरीकों से यद्यपि अलाउद्दीन ने अपनी आय में पर्याप्त वृद्धि की थी, किन्तु वह विशाल सेना का व्यय वहन करने में समर्थ न थी। अतः अलाउद्दीन ने वस्तुओं के मूल्यों में कमी करने व मूल्य निर्धारित करने का निर्णय किया। इसी प्रकार खाद्य पदार्थों, घोड़ा, गाय, बकरी, भैंस आदि की भी सूची बनाकर प्रत्येक के मूल्य निर्धारित कर दिये गये।

Scanned with CamScanner

(B) वस्तुओं की प्राप्ति की व्यवस्था :- अलाउद्दीन जानता था कि यदि ~~आवश्यक~~ वस्तुओं को सही समय पर बाजार में पहुँचाया न गया, और किसी भी वस्तु का यदि बाजार में अभाव हो गया तो उसके मूल्य को स्थिर रखना असम्भव होगा। उसकी बाजार नियन्त्रण नीति की सफलता के लिए आवश्यक था कि बाजार में वस्तुओं का अभाव न हो। अत: सुल्तान अलाउद्दीन ने बाजार में वस्तुओं की प्राप्ति बनाये रखने के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किये :-

1. वे वस्तुएँ जो राज्य में ही उत्पन्न की जाती थी, उनकी पैदावार बढ़ाने की व्यवस्था की।
2. जो वस्तुएँ अन्य प्रदेशों से मंगाई जाती थी, उनको मंगाने की उचित व्यवस्था की।
3. जो वस्तुएँ राज्य में उपलब्ध नहीं थी, उन्हें विदेशों से मंगाने का प्रबन्ध किया गया।
4. वस्तुओं को एकत्रित करने के लिए बड़े-बड़े गोदामों का निर्माण किया गया।

(C) वस्तुओं का उचित वितरण :- आपूर्ति व्यवस्था के समान ही सुल्तान ने वितरण-व्यवस्था का भी समुचित प्रबन्ध किया था। प्रत्येक क्षेत्र की जनसंख्या के अनुसार उस क्षेत्र के बाजार में माल उपलब्ध होता था। प्रत्येक व्यापारी को उतना ही माल दिया जाता था, जितना कि उस दुकान के क्षेत्र के उपभोक्ताओं के लिए आवश्यक था। प्रत्येक व्यापारी को अपना नाम 'दीवाने रियासत' के कार्यालय में लिखना पड़ता था (आधुनिक पंजीकरण के समान)

(D) बाजारों का प्रबन्ध :- उपरोक्त व्यवस्थाएँ तभी प्रभावशाली हो सकती थी जबकि बाजारों का

Scanned with CamScanner

उचित प्रबन्ध किया जाता। अतः सुल्तान ने सम्पूर्ण बाजार की व्यवस्था की, उसने अनेक पदाधिकारियों की नियुक्ति की। इस व्यवस्था का सर्वोच्च अधिकारी 'दीवाने रियासत' कहलाता था, इसके कार्यालय में प्रत्येक व्यापारी को अपना नाम दर्ज कराना पड़ता था। इसके अतिरिक्त गुप्तचरों से भी सुल्तान को बाजार की सूचनाएं मिलती रहती थी। गलत सूचना देने पर कठोर दण्ड दिया जाता था।

सुल्तान ने व्यापारियों की ओर भी ध्यान केन्द्रित किया तथा समस्त व्यापारियों की सूची बनाकर उन्हें अनुमति पत्र दिये।

दण्ड (Punishments) :- अलाउद्दीन ने जिस बाजार नियंत्रण नीति को अपनाया था, उसका पालन न करने वाले व्यक्तियों को कठोर दण्ड दिया जाता था। बरनी ने लिखा है कि यदि कभी कोई व्यापारी कम तौलता था तो उसके शरीर से उतने ही भार का मांस काट लिया जाता था।

बाजार नियन्त्रण नीति का मूल्यांकन :-

सुल्तान अलाउद्दीन ने जिस उद्देश्य के लिए बाजार नियंत्रण नीति को अपनाया था, उसमें वह सफल रहा। बरनी ने इस नीति की सफलता के कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि यह, नियमों के कठोरतापूर्वक लागू किये जाने, राजस्व को कठोरता से वसूलने, धातु के सिक्कों का अभाव व सुल्तान के भय से कर्मचारियों और अधिकारियों की ईमानदारी की वजह से सफल हुई।

प्रो० हबीब एवं निजामी ने इस नीति की प्रशंसा करते हुए लिखा है, जब तक अलाउद्दीन जीवित रहा, इन मूल्यों में तनिक भी वृद्धि न हुई। चाहे वर्षा हो या न हो, गल्ला मण्डी में भाव की स्थिरता उस युग का आश्चर्य

पड़ता था।"

अलाउद्दीन का मूल्यांकन :- सर वूल्जले हेग ने लिखा है - " अलाउद्दीन के शासनकाल से ही वास्तविक अर्थों में सल्तनत का श्रेष्ठ युग प्रारम्भ हुआ।" With the regime of Alauddin, begins what may be called the imperial period of the Sultanate." इसमें कोई सन्देह नहीं कि अलाउद्दीन एक क्रूर व निरंकुश शासक था, जिसके शासनकाल में जनसाधारण को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। कृषक, व्यापारी, अमीर सभी अलाउद्दीन की नीतियों से दुःखी थे। हिन्दुओं पर उसके अत्यधिक अत्याचार किये तथा उन्हें दरिद्रता की चरम सीमा तक पहुंचा दिया। उसकी निरंकुशता की पुष्टि इस तथ्य से होती है कि उसने स्त्रियों व बच्चों तक को नहीं बख्शा, विरोधी स्त्रियों व बच्चों की भी हत्या करवा दी।

यद्यपि उपरोक्त दोष अलाउद्दीन में थे, किन्तु उसकी अनेक योग्यताओं से इन्कार नहीं किया जा सकता। अलाउद्दीन अत्यन्त योग्य सेनापति था। उसने स्थायी सेना की नींव डाली तथा इस प्रकार दिल्ली की सुरक्षा का प्रबन्ध किया। अपनी विजयों के द्वारा लगभग सम्पूर्ण भारत पर विजय प्राप्त करके उसने राजनीतिक एकता की स्थापना की। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह एक कुशल प्रशासक था। विजेता तथा राजनीतिक सूझ-बूझ वाला सुल्तान था। विजेता तथा राजनीतिक सूझ-बूझ वाला सुल्तान था। इसी कारण उसे प्रमुख मध्यकालीन सुल्तानों में से एक माना जाता है।

Dr. Hem Narayan Mahto
Associate Professor
Deptt of History
R.N. College, Pandaul
(Madhubani)

Scanned with CamScanner